भूमिका

भारतभूमि अनुपम प्राकृतिक संपदा से संपन्न है। इस भूमि के प्रत्येक भाग में समृद्ध मानवजीवन एवं संस्कृति को धारण करने के लिये विपुल प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं। भारत के लोगों ने प्रकृति की इस विशिष्ट अनुकंपा को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया है। अपने इस परिवेष के मध्य सहस्राब्दियों से रहते हुए उन्होंने इस प्राकृतिक प्राचुर्य का समुचित नियोजन करने की अत्यंत प्रभावी व्यवस्थाएँ, तकनीकें एवं विशेष दक्षताएँ विकसित की हैं।

संपूर्ण भारतभूमि पर अबाधित प्राकृतिक समृद्धि व्याप्त है और इसीलिये सब स्थानों पर एक विशिष्ट भौगोलिक एकरूपता दिखायी देती है। पर भारत के विभिन्न भागों के प्राकृतिक परिवेष की अपनी-अपनी विशेषताएँ भी हैं, अपना-अपना विशिष्ट वैविध्य भी है। भारत के विभिन्न भागों के लोगों ने अपने स्थानीय परिवेष की विशिष्टताओं को समझा है और उनके अनुरूप विशिष्ट एवं विविध कृषि एवं सिंचाई की व्यवस्थाएँ बनायी हैं, विविध शिल्प एवं तकनीकें विकसित की हैं, अपने घरों एवं सार्वजनिक स्थानों में विविध प्रकार के स्थापत्य का प्रदर्शन किया है, विविध सामाजिक व्यवस्थाओं एवं प्रथाओं का अनुसरण किया है। पर यह सारी विविधता विशिष्ट एवं सर्वत्र व्याप्त भारतीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता के मध्य ही अभिव्यक्त हुई है।

भारत की विविध प्राकृतिक संपदाओं और विविध भौतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का अवलोकन करना एक अनूठा मार्मिक अनुभव होता है। भारत के लोग अपने परिवेष के साथ सामञ्जस्य बैठाते हुए उसके अनुरूप अपने को ढालते रहे हैं। उनके अपने परिवेष के साथ इस प्रकार एकरूप हो जाने में, अपने आसपास की प्रकृति के अनुरूप ढलते जाने में, एक विशिष्ट कलात्मकता के, काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं।

भारत के विभिन्न भागों के भूगोल, भूविज्ञान, भूगर्भीय संरचना, जलवायु, जनसांख्यिकी, भू-उपयोग, कृषि, पशुपालन, शिल्प, उद्योग, संस्कृति एवं धर्म आदि के बारे में विस्तार से जानना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न भागों के लोगों के जीवन एवं परिवेष में कोई सुधार अथवा विकास करने के किसी प्रभावी हस्तक्षेप के पूर्व तो यह सब जानना अनिवार्य ही है। मध्यप्रदेश जिला संसाधन मानचित्रकोष प्रकल्प प्रदेश के सब जिलों के लिये विस्तृत भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सांख्यिकी एवं तकनीकी सूचनाओं का संकलन एवं विश्लेषण करने और विभिन्न जिलों में प्रकृति एवं सभ्यता के मध्य व्यवहार में प्रकट होने वाली विशिष्ट काव्यात्मकता को अभिव्यक्त करने का एक प्रयास है।

दतिया बुंदेलखण्ड में पड़ता है। उत्तर में यमुना नदी और दक्षिण एवं पश्चिम में विंध्यपठार से घिरी अर्द्धवृत्ताकार भूमि को बुंदेलखण्ड के नाम से जाना जाता है। दतिया बुंदेलखण्ड के उत्तरपश्चिमी छोर पर है। अभी कुछ वर्ष पहले जोड़ी गयी भाण्डेर तहसील को छोड़ कर शेष जिला बुंदेलों का ऐतिहासिक दतिया राज्य हुआ करता था।

बुंदेलखण्ड की भूगर्भीय संरचना भी विशिष्ट है। भूवैज्ञानिकों ने इस भूगर्भीय संरचना को 'बुंदेलखण्ड क्रेटॉन' का नाम दिया है। यह क्रेटॉन पृथ्वी के सबसे पुराने आर्कियन युग के ठोस कणाश्म (ग्रेनाइट) शैलों से बना है। जैसे-जैसे हम इस क्षेत्र में उत्तर अथवा पूर्व की ओर बढ़ते हैं वैसे-वैसे ये कणाश्म शैल नदियों द्वारा लायी गयी जलोढ मृदा की परत से ढकने लगते हैं। यह परत क्रमशः गहराती हुई अंततः गंगा-यमुना के मैदान से मिल जाती है। दतिया का अधिकतर भाग इस संरचना के जलोढ मृदा वाले समतल भाग में आता है। सतह के ऊपर फैले हुए कणाश्म तो जिले के दक्षिणी भागों में ही दिखते हैं।

सिंध, बेतवा, केन एवं तमसा बुंदेलखण्ड से उत्तरपूर्व की ओर बहती हुई विभिन्न स्थानों पर यमुना से मिलती हैं। दतिया सिंध के पूर्व में स्थित है, यह नदी बुंदेलखण्ड की पश्चिमी सीमा मानी जाती है। दतिया की ग्वालियर के साथ लगती पश्चिमी सीमा का बड़ा भाग भी सिंध से ही परिभाषित होता है। सिंध की सहायक पहूज जिले की दक्षिणी एवं पूर्वी सीमाओं के साथ दूर तक बहती है और प्रायः पूरी भाण्डेर तहसील के भीतर से होकर निकलती है। सिंध एवं पहूज दतिया की संस्कृति, कृषि एवं वहाँ के जनजीवन का अभिन्न अंग हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से बुंदेलखण्ड चंदेलों एवं बुंदेलों का क्षेत्र है। पहले चंदेले और फिर बुंदेले यहाँ शताब्दियों तक राज्य करते रहे। इन दोनों राजवंशों में अनेक महान् एवं अत्यंत पराक्रमी राजा हुए। इनमें से अनेकों ने भव्य मंदिरों, तालों एवं प्रासादों का निर्माण करवाया। इस कारण बुंदेलखण्ड उच्च-स्थापत्य के

भूमिका

स्मारकों के लिये विख्यात है। चंदेलों द्वारा निर्मित खजुराहो के विख्यात मंदिर क्षेत्र के छतरपुर जिले में हैं। दतिया के पड़ोस में स्थित ओरछा बुंदेलों की सबसे महत्त्वपूर्ण एवं भव्य राजधानी थी। दतिया राज्य की स्थापना 1626 ईसवी में ओरछा के राजा बीरसिंहदेव के पुत्र भगवानराव ने की थी। बीरसिंह देव अपने पराक्रम एवं स्थापत्य दोनों के लिये विख्यात हैं। बीरसिंह देव ने ही दतिया में एक भव्य प्रासाद का निर्माण करवाया। कुछ ऊँची पहाड़ी पर बना बीरसिंहदेव प्रासाद दतिया का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं भव्य स्मारक है, दतिया नगर में आप कहीं भी खड़े हों, यह प्रासाद किसी-न-किसी कोने से दिख ही जाता है।

बुंदेलखण्ड के एक कोने में होने के कारण दतिया ग्वालियर, आगरा एवं दिल्ली के बड़े क्षेत्र के इतिहास का साक्षी रहा है और मुगल, मराठा एवं ब्रितानवी काल की घटनाओं से प्रभावित होता रहा है। इन सबसे बहुत पहले के मौर्य एवं गुप्त साम्राज्यों के इतिहास में भी दतिया का स्थान रहा है। सम्राट् अशोक का एक शिलालेख जिले के दक्षिणी भाग के गुजर्रा में स्थित है।

बुंदेलखण्ड कृषि के दृष्टि से सर्वदा समृद्ध रहा है। सन् 641 ईसवी में हर्षवर्धन के समय चीनी बौद्ध यात्री ह्युएन त्सांग बुंदेलखण्ड आया था, उसके वृत्तांतों में यहाँ की समृद्ध खेती का विवरण मिलता है। पर पिछले दशक में कई वर्षों की निरंतर अल्पवर्षा के कारण बुंदेलखण्ड में अभाव की स्थिति बनी रही है। दतिया में भी इस का कुछ प्रभाव रहा। पर सामान्यतः दतिया में अच्छी खेती होती है। पिछले कुछ वर्षों से जिले में 400 किलोग्राम से भी अधिक खाद्यान्न और 40 किलोग्राम से अधिक तिलहन का प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष उत्पादन हो रहा है। दतिया की खेती में पर्याप्त विविधता भी है। अनाजों में अब गेहूँ की प्रधानता है। फिर भी जिले में अनेक प्रकार के अनाज, दलहन एवं तिलहन उगाये जाते हैं। अब गन्ने की भी पर्याप्त खेती होने लगी है। दूर-दूर तक पसरे लहलहाते खेत, खेतों में सघनता से काम में लगे स्त्री-पुरुष और कृषि-उत्पाद को समेटने में अपर्याप्त पड़ते गोदाम, ऐसे ही दृश्य जिले में प्रायः दिखायी देते हैं।

पिछले दशक में दतिया में नहरों का एक जाल सा बिछ गया है। पहले बेतवा नहर की भाण्डेर शाखा से कुछ सिंचाई हुआ करती थी। पिछले दशक में बेतवा का कुछ पानी अंगूरी नाम की एक छोटी सी सरिता में डाला गया है और फिर इसे बांध कर दतिया नहर निकाली गयी है। दतिया नहर की इस नयी सिंचाई व्यवस्था को पुरानी भाण्डेर शाखा से जोड़ दिया गया है। अब जिले के प्रत्येक भाग में नहर का पानी पहुँचने लगा है। इससे शीत ऋतु (रबी) की फसल के क्षेत्र में बहुत विस्तार हुआ है और जिले की खेती एक नये स्तर पर पहुँच गयी है।

दतिया की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। उद्योग, शिल्प एवं वाणिज्य आदि सब कृषि पर निर्भर हैं, कृषि के पूरक हैं।

दतिया की संस्कृति में धर्म का प्रमुख स्थान है। जिले में अनेक पवित्र पुरातन तीर्थस्थल हैं। पहूज तट पर उनाव का सूर्यमंदिर, दतिया नगर का पीतांबरा पीठ, सोनागिर का जैनक्षेत्र, सनत्-कुमारों से जुड़ा सेंवढ़ा का सन्कुआ तीर्थ और सिंध के उत्तरी तट के वनों में रतनगढ़ माता का स्थान, जिले के विभिन्न भागों में स्थित इन सब पावन क्षेत्रों की ख्याति देश-विदेश में व्याप्त है। इनके दर्शन के लिये दूर-दूर से लोग दतिया आते हैं।

इस प्रकल्प संबंधी हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर हमें प्रदेश के विभिन्न जिलों की भूमि, परिवेष एवं लोगों के विषय में इतने विस्तार से जानने का अवसर देने के लिये हम मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के आभारी हैं। जिला संसाधन मानचित्रकोष के काम के लिये नियोजित परिषद् के वैज्ञानिक तो उत्साहपूर्वक इस कार्य में लगे ही हैं, परिषद् के अन्य सब विभागों के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों का सहयोग भी सर्वदा मिलता रहा है।

दतिया के संसाधन मानचित्रकोष का यह हिंदी संस्करण बनाते हुए जहाँ-जहाँ संभव हुआ वहाँ नवीनतम आंकड़ों का उपयोग कर लिया गया है, 2011 की जनगणना के अब तक प्रकाशित आंकड़ों का समावेश भी उपयुक्त स्थानों पर हो गया है।

केंद्र में मेरे साथी श्री एम. डी. श्रीनिवास और श्री बनवारी का सहयोग सब कार्यों में सर्वदा बना ही रहता है। और, आञ्जनेय, जीविषा, अर्चन एवं कुसुम के स्नेह, रुचि एवं प्रोत्साहन से ही सब कार्यों का संपादन हो पाता है। उन सबका आभार।

नयी दिल्ली
रामनवमी, कलि 5116
8 अप्रैल 2014

जितेन्द्र बजाज